राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 3 चतुर्थ विधान सभा के तृतीय सत्र का पहला दिवस संख्या 1

सोमवार,

दिनांक 26 अगस्त, 1968

विधान सभा की बैठक म.१. 3 बजे विधान सभा भवन जयपुर में प्रारम्भ हुई ।

(श्री निरंजन नाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री रामकिशोर व्यास द्वारा शपथ

श्री अध्यक्ष: श्री रामकिशोर द्वारा शपथ!

श्री सचिव (राजस्थान विधान सभा): श्री रामकिशोर जी व्यास

(श्री रामकिशोर व्यास शपथ ग्रहण करने हेतु सदन-पटल के समीप आये)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : (जौहरी बाजार, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है। जयपुर शहर में जो पीने का पानी वितरित किया जाता है वह पानी अशुद्ध है, उसमें कीडे-मकोडे निकले हैं जिसके कारण जयपुर शहर के अन्दर महामारी फैली हुई है और जयपुर शहर का जन जीवन असंतुलित हो गया है और जयपुर शहर की जनता के सामने एक भयंकर संकट उत्पन्न हो गया है। उसके सम्बन्ध में राज्य सरकार ने अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की है। समाचार पत्रों में इस सम्बन्ध में समाचार प्रकाशित हुए हैं। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस तरह से जयपुर शहर के अन्दर जन जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, मैं समझता हूं कि माननीय रामकिशोर जी व्यास शपथ ग्रहण करें, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह मसला है। इस बात को वह भी स्वीकार करेंगे और इस बात से वह भी इन्कार नहीं करेंगे। जयपुर शहर की इस समस्या पर इस सदन के माननीय सदस्यों द्वारा विचार किया जाय और उसके पश्चात् शपथ ग्रहण कराई जाय।

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर): अध्यक्ष महोदय, जो माननीय सदस्य शपथ ग्रहण करने जा रहे हैं वह भी इस प्रश्न में दिलचस्पी रखते हैं। और उनकी दिलचस्पी इस समस्या में है इस बात को दिखाने के लिए यह जरूरी है कि वह स्वयं·····

श्री अध्यक्ष: रिकार्ड नहीं किया जाय।

(अध्यक्ष महोदय के आदेश के पश्चात सर्व श्री नत्थीसिंह, विजयसिंह (मकराना) व मुकुटबिहारीलाल गोयल द्वारा अभिव्यक्त विचारों को प्रतिवेदित नहीं किया गया)

(श्री रामकिशोर व्यास ने शपथ ग्रहण की)

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): बहुत बहादुरी का काम किया है।

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल (बयाना): (श्री रामकिशोर व्यास द्वारा स्वर्ण-पुस्तिका में हस्ताक्षर करते समय) मातृ भाषा में करना।

श्री रामकिशोर व्यास: (हस्ताक्षर करने के पश्चात्) सबक की जरूरत नहीं है।

शोक प्रकट

श्री अध्यक्ष: सदन के निम्नांकित सदस्यों के निधन पर शोक प्रकट:

1. श्री विजयसिंह रावत
2. श्री जेपाराम

श्री हरिश्चन्द्र माथुर, सदस्य, राज्य सभा के निधन पर शोक प्रकट।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, विधान सभा के पिछले सत्र के बाद हमारे लिए यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आज जब हम यहां पर मिल रहे हैं तब इसी सदन के दो माननीय सदस्य हमारे बीच असामयिक मृत्यु की वजह से उपस्थित नहीं हैं। इसी प्रकार राजस्थान से जो पहले लोक सभा में सदस्य रहे और इस समय राज्य सभा के अन्दर राजस्थान की तरफ से सदस्य थे–उन श्री हरिश्चन्द्र जी माथुर का हृदय गति रुक जाने की वजह से देहावसान हो गया।

श्री हरिश्चन्द्र माथुर के नाम से और उन्होंने राजस्थान की और सारे देश की दिल्ली में जाने के बाद अपने स्वतंत्र विचारों के द्वारा, निर्भीक विचारों के द्वारा जो कुछ सेवा की है उससे राजस्थान का मस्तक ऊंचा हुआ है और उन्होंने राजस्थान को गौरवान्वित किया है। उनके स्थान की पूर्ति आसानी के साथ नहीं हो सकती। वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके परिवार के लिए शोकसंवेदना का संदेश भी इस सदन की तरफ से भेजा जाय ऐसा आपसे मैं निवेदन करूंगा।

श्री विजय सिंह जी रावत एक होनहार नवयुवक थे और इस चुनाव के बाद जब वे इस सदन में आये, काफी सक्रिय होकर उन्होंने काम किया। वह एक नौजवान थे और इस राजस्थान की सेवा में वह काफी दिलचस्पी ले रहे थे। दुर्भाग्य से मोटर दुर्घटना में उनका देहावसान हुआ। उनके प्रति भी मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके परिवार के लिए शोक संवेदना।

श्री जेपाराम इस चुनाव में जालौर क्षेत्र से चुन कर आये थे और आने के बाद अचानक उनका भी देहावसान हो गया। वह भी हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं। उनकी आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार के लिए भी शोक संवेदना प्रकट करता हूं।

मैं आशा करता हूं कि सदन के शोक संवेदना के संदेश इन सबके परिवारों को भेजेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, श्री विजयसिंह रावत के आकस्मिक, असामयिक निधन के कारण मुझे दुःख हुआ। यह विधान सभा जब तारीख छः अप्रेल को विसर्जित हुई उस समय हममें से कोई भी कल्पना तक नहीं कर सकता था कि उनकी मृत्यु के सम्बन्ध में इस सदन के समक्ष आज प्रस्ताव आयेगा। श्री रावत सम्भवतः उग्र स्वभाव के थे किन्तु वह मेरे दल के कर्मठ और सम्माननीय सदस्य थे। गत आम निर्वाचन में उन्होंने जो नसीराबाद विधान सभाई निर्वाचन क्षेत्र से सफलता

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

प्राप्त की थी वह एक महत्वपूर्ण थी। मैं स्वर्गीय रावत की दिवंगत आत्मा के लिए मेरे दल की ओर से और मेरी ओर से चिर शांति की प्रार्थना करता हूं। और मेरे दल के साथ मैं उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना और सहानुभूति प्रदर्शित करता हूं।

श्री जेपाराम हमारे दल के माध्यम से इस सदन के सदस्य बने थे, वे हजारों मतों से विजयी होकर के इस सदन में आये थे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने दल परिवर्तित किया मैं समझता हूं व्यक्ति की मृत्यु के बाद ऐसे छोटे मोटे वाद-विवाद समाप्त कर दिये जाने चाहिये। मैं स्वर्गीय श्री जेपाराम की आत्मा के लिये चिरशान्ति की प्रार्थना करते हुए मेरे दल के साथ उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना और सहानुभूति प्रकट करता हूं।

श्री हरिश्चन्द्र माथुर भूतपूर्व मारवाड राज्य के उच्च अधिकारी रह चुके थे उस समय वे एक राजाओं के आदमी थे। स्वतन्त्रता के बाद महानिर्वाचन के बाद ये राज्य सभा के सदस्य चुने गये। मैं भी उनकी बगल में ही राज्य सभा में बैठता था। वे निर्दलीय सदस्य के रूप में सर्व प्रथम आये थे मैं भी निर्दलीय सदस्य के रूप में राज्य सभा में गया था। मुझे खूब याद है वे बडे परिश्रम के साथ तैयारी करते थे। प्रश्नोत्तरकाल का वे पूरा लाभ उठाते थे। कुछ समय के पश्चात् वे कांग्रेस दल में सम्मिलित हुए, राज्य सभा के सदस्य होने के पश्चात् लोक सभा के सदस्य हुए। उनके निधन से मैं यह अवश्य मानता हूं कि राज्य सभा के, व लोक सभा के सदस्यों के अन्दर जो कमी, क्षति उनके निर्धन से हुई है, उसकी पूर्ति करना आसान नहीं होगा। मैं श्री हरिश्चन्द्रजी की दिवंगत आत्मा की चिरशान्ति के लिये प्रार्थना करते हुए, मेरे दल के साथ उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना और सहानुभूति प्रकट करते हुए, इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री भैंरूंसिंह (किशनपोल बाजार, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, श्री हरिश्चन्द्र माथुर, श्री विजयसिंह रावत और श्री जेपाराम जी के प्रति मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर राजस्थान के, लोक सभा के सदस्यों में एक ऐसे प्रकार का व्यक्तित्व ले कर चलते थे जिनका सहारा राजस्थान सरकार और राजस्थान की जनता को बहुत ही अधिक मिलता था। मुझे याद है राजस्थान केनाल और राजस्थान की योजनाओं के सम्बन्ध में या राजस्थान में कहीं कोई वित्तीय संकट खडा हुआ तो उस संकट के समय में भारत सरकार के सहयोग से किस प्रकार समाधान किया जा सकता है, उसमें जिस प्रकार का श्री माथुर का सहयोग मिलता रहा, मैं समझता हूं उस सहयोग का अभाव अब हमारे सामने खडा होगा।

श्री हरिश्चन्द्र माथुर ने राजस्थान से जाकर हिन्दुस्तान की लोक सभा में और राज्य सभा में इस बात को सिद्ध कर दिया था कि राजस्थान का एक व्यक्ति न केवल प्रशासन में ही कुशल है अपितु वह लोकतन्त्रीय प्रणाली के संचालन में अच्छे सुझाव देने वाला एक अच्छा वक्ता भी है और प्रमाणिकता के तौर पर अपनी बात रख कर सरकार को कार्य संचालन के लिये अच्छे सुझाव भी दे सकता है।

राजस्थान का दुर्भाग्य है कि इस स्थिति में वह श्री हरिश्चन्द्र माथुर का सहयोग लेने की

(श्री भैरोंसिह)

स्थिति में नहीं रहा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री हरिश्चन्द्र माथुर की दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस शोक का सामना करने के लिये शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, श्री विजयसिंह रावत, आज जब मैं दाहिनी ओर देखता हूं तो श्री विजयसिंह रावत का अभाव अखरता है। उस साथी ने जब से वह विधान सभा में आया था, उस समय से आखिर तक किस प्रकार विधान सभा की कार्यवाही को सीखने का एक कार्यक्रम चालू किया था, आज से कुछ दिन पहले उन्होंने मुझसे पूछा था कि मैं विधान सभा में एक अच्छा वक्ता बनना चाहता हूं, मेरे बोलने के समय लोग मेरी तरफ देखें, इस प्रकार की इच्छा से मैं विधान सभा की कार्यवाही में भाग लेना चाहता हूं, इसके लिये मुझे क्या करना चाहिये, तो मैंने मजाक में कहा था कि विधान सभा में बोलने वाले सदस्य को विधान सभा की नियमावलि कण्ठस्थ होनी चाहिये। मुझे इस बात की खुशी है कि जब 15 दिन बाद वे मेरे मकान पर आये तो उन्होंने कहा कि उन्होंने 60 नम्बर तक नियम कण्ठस्थ कर लिये हैं, किसी नियम के सम्बन्ध में पूछ कर देख सकते हैं। इस प्रकार की लगन उस व्यक्ति में थी। मैं यह नहीं कहना चाहूंगा कि विधान सभा के माननीय सदस्य विधान सभा की कार्यसंचालन नियमावलि के सम्बन्ध में पूरी दिलचस्पी नहीं रखते जिससे कि वे विधान सभा की कार्यवाही में अच्छी तरह भाग लेकर राजस्थान की जनता की सेवा अच्छी तरह से कर सकें। उस होनहार युवक की जनता की सेवा करने में इस प्रकार की दिलचस्पी थी, भगवान् की कराल गति थी कि वे हमारे बीच से चले गये और यह सदन ऐसे होनहार व्यक्ति से महरूम रहा, लेकिन ईश्वर की गति के साथ किसी का कोई बस नहीं चलता। हम यही कर सकते हैं कि उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करें कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को इस शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, श्री जेपारामजी बहुत सीधे सादे व्यक्तित्व के आदमी थे, मैं कई बार उनसे मिला हूं, मैं उनके सीधे सादे व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ, वह व्यक्ति हमारे बीच से चला गया। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोकसंतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री रामकिशन (वैर): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री हरिश्चन्द्रजी, श्री विजयसिंह रावत और श्री जेपाराम के लिये मैं अपनी ओर से और मेरे दल की ओर से श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं। श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर के लिये मैं कोई केवल इसलिये श्रद्धान्जलि अर्पित नहीं करता कि वे राजस्थान के निवासी थे और राजस्थान के हित के लिये कार्य करते थे। बल्कि इसलिये करता हूं कि वे साधारण सदस्य नहीं थे, मेरी मान्यता है कि आजकल लोक सभाएं और विधान सभाएं हैं वे केवल मर्यादाओं के चक्कर में पड कर लोक हित के कार्यों को छोडती जा रही हैं, ऐसे समय में श्री हरिश्चन्द्र की कार्य प्रणाली से लोगों को बडी प्रेरणा मिलती थी। राज्य के प्रशासनिक सुधारों के बारे में श्री हरिश्चन्द्र जी ने जो सुझाव दिये वे बहुत महत्वपूर्ण थे वे बगैर किसी राजनैतिक पृष्ठभूमि के प्रशासनिक सुधारों

(श्री रामकिशन)

में इतने ऊंचे गये कि जिन लोगों का राजनीति में उनके बजाय अधिक ऊंचा स्थान माना जाता था वे लोग भी उतना प्रभावित नहीं कर सके जितना श्री हरिश्चन्द्रजी ने प्रभावित किया।

श्री विजयसिंह, जिनके बारे में अधिक कहने को आज भी जी नहीं करता, वे एक साहसी और निर्भीक युवक थे, वे अपने आपको संसदीय प्रणाली में ढालते जा रहे थे। कहीं कहीं हमें ऐसा लगता था कि वे अधिक गुस्से में आ गये हों पर आज हमें ऐसे लोग मिल सकते हैं जो विधान सभा की नियमावलि को कण्ठस्थ कर लें, नियम उपनियमों की त्रुटियों को चैलेंज कर सकें पर आज आवश्यकता इस बात की है कि आज जो मिलिटरेंस घटता जा रहा है, ऐसे समय में ऐसे सदस्य का अभाव हमें निरन्तर खटकता रहेगा। हम उनकी बातों के लिये किसी को पसंद करें या न करें पर आज जिस प्रकार की समय की गतिविधियां चल रही हैं, ऐसी स्थिति में ऐसे सदस्य से हमें हमेशा प्रेरणा मिलती रहती थी।

इसी प्रकार श्री जेपाराम से हम लोगों का ज्यादा परिचय नहीं था पर वे सदन के विनम्र सदस्यों में से थे।

मैं सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आशा करता हूं कि जो तीनों महानुभाव हमें छोड कर चले गये उनके शोक-संतप्त परिवारों के प्रति सदन संवेदना और सहानुभूति प्रकट करेगा।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ) : अध्यक्ष महोदय, हमारे बीच से सम्माननीय दो विधान सभा के सदस्य और तीसरे राज्य सभा के सदस्य उठ गये। कराल काल ने हमसे उनको छीन लिया। श्री रावत एक होनहार साहसी और कर्तव्यपरायण सदस्य थे। श्री रावत जब याद आते हैं तो उनका चित्र आंखों के सामने मंडराने लगता है। मुझे याद है, आम चुनावों से पहले श्री रावत मेरे पास आये थे और उन्होंने इच्छा जाहिर की कि मैं राजनिति में आना चाहता हूं पर वे लोग जो पहले से राजनिती में हैं वे मुझे पसंद नहीं करते। मैंने सुझाव दिया था कि जिंदगी में एक लक्ष्य को लेकर और कर्तव्य को लेकर जो चलता है, उसको कोई रोक नहीं सकता। इसलिये कर्तव्य और लक्ष्य को लेकर चलो, कोई राजनीति वाले आपको राजनीति में आने से नहीं रोक सकेंगे। श्री रावत ने उसकी गांठ बांधी और वहां जाकर कार्य प्रारम्भ कर दिया। मुझे उस समय इस बात की बडी खुशी हुई जब श्री रावत नसीराबाद से निर्वाचित घोषित हुए। श्री रावत हमेशा याद दिलाते रहे कि आपके शब्दों से प्रेरणा मिली और इस सदन तक पहुंच सका। हमें आज इस बात का बडा दुख है कि इतने साहसिक और कर्तव्य परायण व्यक्ति को क्रूर काल ने हमसे छीन लिया मैं उनके प्रति मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार को संवेदना प्रकट करता हूं।

दूसरे हमारे साथी जेपारामजी एक दल से चुन कर आये फिर दल परिवर्तन करके दूसरे दल में चले गये। इसके बावजूद वे एक सज्जन और सरल स्वभावी सदस्य थे। वे प्रायः मिलते थे। उनको इस बात का दुःख था कि उन्होंने दल परिवर्तन किया और शायद उनका इस दुःख के कारण देहावसान गया हो।

Page No. 6

(श्री दौलतराम सारण)

क्रूर काल ने उनको भी हमारे बीच से छीन लिया उसका हमें दुख है। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से हार्दिक श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार को संवेदना प्रकट करता हूं।

तीसरे संसद् सदस्य श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर इस काल में बिछुड गये। उनका जहां तक ताल्लुक है वे अच्छे संसदीय वक्ता थे और संसद् में उनकी बडी प्रतिष्ठा थी। वे हमेशा दलीय भावना से उठ कर देश और प्रदेश की जनता के हित की दृष्टि से अपना कर्तव्य निभाते थे। उनसे कई बार मिलने का मौका मिला। जब उनसे मिलने का अवसर आता था तो वे राजस्थान की जनता, उसके विकास और भविष्य के बारे में बातचीत करते थे और उसके लिये हमेशा चिन्तित रहते थे। ऐसे कर्तव्य परायण दूरदर्शी अनुभवी संसद् सदस्य का हमसे विछोह अवश्य दुखदायी है लेकिन क्रूर काल के सामने, विधि की विडम्बना के सामने किसी का वश नहीं है। उसके लिये केवल संवेदना ही प्रकट कर सकते हैं उसके सिवाय और कोई चारा नहीं है। मैं उनके प्रति मेरी ओर से मेरे दल की ओर से हार्दिक श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना जाहिर करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री हरिश्चन्द्र माथुर, सदस्य राज्य सभा श्री विजयसिंह रावत और श्री जेपाराम के असामयिक निधन पर मैं शोक प्रकट करता हूं और उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़): अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय माथुर साहब ने दिल्ली जाकर राजस्थान का मस्तक ऊंचा किया, अपनी प्रतिभा बतायी। राजस्थान के हर मसले में वे भाग लेते थे। अचानक हमारे बीच से वे चले गये यह हमारे लिये बडे दुर्भाग्य की बात है।

श्री रावत जब मैं यहां आया तो उनकी सूरत मेरी आंखों के सामने आयी। जिस दिन वे मरे, दोपहर को हम लोग मिले थे। दूसरे दिन जब यह सुना कि वे मर गये हैं तो बडा आश्चर्य और दुःख हुआ कि इतनी जल्दी आदमी कूच कर सकता है। इससे हमको प्रेरणा लेना चाहिये कि मृत्यु न जाने कब आ जाय इसलिये जितने अच्छे काम कर सकें करें। जब उनको गुस्सा आता था तो मुझे बुरा लगता था लेकिन वे दिल के इतने साफ थे कि थोडी देर बाद कुछ बात ही नहीं। उनके वृद्धा माता है, पत्नी है और चार पांच बच्चे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि माननीय मुख्य मंत्रीजी उनके लिये व्यवस्था करेंगे। लेकिन हमारे लिये भी उनके परिवार के सदस्यों के प्रति कुछ जिम्मेदारी है। मुझे मालूम नहीं जेपारामजी के कितने बच्चे हैं। एक दिन का दैनिक भत्ता हम लोग उनके लिये निकालें और उसको अलग डाल दें जो उनके बच्चों की शिक्षा के लिये काम आये।

माननीय जेपारामजी से मेरा विशेष परिचय नहीं था। लेकिन जिस रोग से वे मरे हैं मेरा प्रयास रहेगा कि लोग उस रोग से बचें। वे आज हमारे बीच नहीं है। लेकिन उन्होंने लोगों के पास पहुंचने की मुझको एक प्रेरणा दी है। हम लोग अच्छे काम करें, लोगों में जाकर, यही उन लोगों के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदन के नेता एवं अन्य माननीय सदस्यों ने श्री विजयसिंह रावत, श्री जेपाराम तथा श्री हरिश्चन्द्र माथुर के दारुण एवं आकस्मिक निधन पर जो व्यथापूर्ण उद्गार प्रकट किये हैं उनके इन भावों के साथ मैं अपनी संवेदना के दग्धकण हृदय के अन्तः स्थल से इन दिवंगत आत्माओं के प्रति अर्पित करता हूं।

श्री विजयसिंह रावत गत आम चुनावों में नसीराबाद निर्वाचन क्षेत्र से स्वतन्त्र पार्टी के टिकिट पर निर्वाचित हुए थे। स्वयं का अतीत जीवन नौ सेना की सेवाओं से सम्बन्धित होने के कारण उनमें अदम्य शक्ति राष्ट्र भक्ति एवं सैनिकों की समस्याओं के प्रति अपार सजगता थी, जिसके कारण राष्ट्रीय प्रश्नों पर वे सदैव ही सजग प्रहरी की तरह सदन में जागरूक रहे। इस थोड़े से समय में उन्होंने सदन में अपना स्थान कर्तव्य परायण एवं निष्ठावान विधायक के रूप में बनाया और इस प्रांगण पर होने वाले वाद-विवादों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर अपनी क्षमता, योग्यता तथा परिश्रम का अपूर्व परिचय दिया। श्री रावत जितने सजग एवं स्पष्टवादी सदन में थे उतने ही सरल एवं सहृदय थे। वे विधान सभा की स्वतन्त्र पार्टी के मुख्य सचेतक रह चुके थे तथा उन्होंने उसी हैसियत में शिमला में हुए छठे अखिल भारतीय सचेतकों के सम्मेलन में भाग लिया था। वे लगातार दो वर्षों से विधान सभा की आश्वासन समिति के सदस्य भी रहे। उनकी अचानक जीप दुर्घटना में मृत्यु से हमारे बीच से एक कर्तव्य निष्ठ एवं सेवा भावी विधायक चला गया।

इसी प्रकार श्री जेपाराम जालौर क्षेत्र से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। वे एक अच्छे कार्यकर्ता और मजदूर संगठन के कार्यों में रुचि लेने वाले सक्षम विधायक थे। उनका देहावसान 6 अप्रेल, 1968 को हुआ।

श्री हरिश्चन्द्र माथुर राज्य सभा के सदस्य थे और उनका चुनाव गत वर्ष ही हुआ था। यों राज्य सभा में वे उच्च कोटि के पार्लियामेन्टेरियन (Parliamentarian) कुशल वक्ता तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एवं प्रशासनिक समस्याओं के अध्ययन में अपनी विशेष क्षमता एवं अभिरुचि रखते थे। एक लम्बे समय से लोक सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने संसद् एवं उसके बाहर अपना विशेष स्थान बनाया था, प्रशासनिक सुधार आयोग के सदस्य के रूप में उन्होंने अध्ययन शीलता, राष्ट्र के प्रशासनिक ढांचे को सुधारने में अपने सुझावों से स्वयं की योग्यता तथा अपूर्व क्षमता का परिचय दिया था। वे राजस्थान प्रशासनकि सुधार आयोग के सभापति भी थे।

श्री माथुर के निधन से राजस्थान की तो क्षति हुई ही है किन्तु संसद् एवं राष्ट्र के प्रमुख नेताओं ने भी उनके अभाव को सार्वजनिक जीवन में अखरने वाला माना है।

इन तीनों महानुभावों के दुखःद निधन से सदन को व हमको अपार क्षति पहुंची है जो पूरी होना कठिन है।

मैं इस अवसर पर अधिक न कह कर माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे कृपया दो मिनिट के लिये मौन खड़े होकर दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने के लिये प्रार्थना करें।

(दो मिनिट खड़े होकर दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करने के लिये प्रार्थना की गई)

कृपया स्थान ग्रहण करिये

(विराम)

सदन की कार्यवाही कल 11 म.पू. तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तत्पश्चात् सदन की कार्यवाही दिनांक 27–8–68 के 11 म.पू. तक के लिये म.प. 3.30 पर स्थगित हुई)

शुद्धि-पत्र

(सोमवार, दिनांक 26 अगस्त, 1968)

स्कम्भ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4
12	1	श्री मनोर्रसिंह मेहता	श्री मनोहरसिंह मेहता
12	17	गलता	लगता
13	26	पाटी	पार्टी